कृषि किरण अंक-11, जून 2021: पृष्ठ: 25-28
http://saaer.org.in

प्याज व लहसुन के मुख्य कीटः प्रकोप एवं प्रबंधन

अंजना ठाकुर व मधु पटियाल*
वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केन्द्र हमीरपुर, हिमाचल प्रदेश 177044
**वैज्ञानिक, भा कृ अनु परि क्षेत्रिय अनुसंधान केन्द्र, शिमला*

प्याज व लहसुन भारत में उगाई जाने वाली प्रमुख सब्जियों में गिनी जाती हैं। इनमें ऐसे पोषक तत्व होते हैं जो कई तरीको से हमारे स्वास्थ के लिए लाभदायक होते हैं।

मौसम में आर्द्रता तथा तापमान का लगातार उतार चढ़ाव कीड़ों एवं बीमारियों को न्योता देता है जिसके कारण फसलों को सुरक्षित रखना बहुत मुश्किल होता है। प्याज और लहसुन की उत्पादकता को प्रभावित करने में मुख्यतः दो प्रकार के वाहय कारक होते हैं, अजैविक कारक (तापमान, धूप, वर्षा तथा वातावरण की आर्द्रता इत्यादि) एवं जैविक कारक (कीट, बीमारियां और खरपतवार)। कीट प्याज और लहसुन को काफी हानि पहुँचाते हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि किसान उचित कीट प्रबंधन विधियों को अपनाकर प्याज व लहसुन की फसल को सफलतापूर्वक उगा कर लाभ कमाएं।

प्याज व लहसुन के मुख्य कीट

1. थ्रिप्स

थ्रिप्स प्याज एवं लहसुन का मुख्य कीट है। ये आकार मे छोटे, 1-2 मि.मी. लंबे, सफेद-भूरे या हल्के पीले रंग के कोमल कीट होते हैं। इनके मुखांग रस चूसने वाले होते हैं। शिशु व वयस्क दोनों ही पत्तियों को खुरचकर रस चूसते हैं। थ्रिप्स से प्रभावित पौधे की पत्तियों पर हल्के हरे रंग के लम्बे -लम्बे दाग दिखाई देते हैं जो बाद में सफेद हो जाते हैं। पत्तियों पर सफेद धब्बे और धारियाँ दिखाई देती हैं। इस कीट का अधिक प्रकोप होने पर पत्तियाँ सिकुड़ जाती हैं और पौधे की बढ़वार रुक जाती हैं जिससे उपज में कमी हो जाती है। इसके अलावा फूलों में भी नुकसान होने की वजह से बीज कम बनते हैं।

थ्रिप्स

प्याज की मक्खी

2. प्याज की मक्खी

यह मक्खी प्याज एवं लहसुन की फसल का प्रमुख कीट है। कभी- कभी इस कीट द्वारा फसल में बहुत क्षति होती है। प्याज की मक्खी बहुत ही नाजुक धूसर-भूरे रंग की लगभग 5-7 मि.मी. की होती है। जब अंडों से छोटी सूँडी निकलती हैं तो वह पत्ती के खोल मे रेंगती हुए कंद में प्रवेश कर जाती है और पूरे जड़ तंत्र को नष्ट कर देते हैं। जिससे भूमि के पास वाले तने का भाग सड़कर नष्ट हो जाने से पूरा पौधा सूख जाता है।

3. माईट

माईट भारतीय उपमहाद्वीप में प्याज और लहसुन का एक उभरता हुआ एवं महत्वपूर्ण अष्टपदी है। इसके शिशु प्रायः लाल रंग के होते हैं और चार जोड़े पैर पाये जाते हैं। मादाएँ लाल और आकृति अंडाकार होती हैं। शिशु और वयक्स प्रारंभिक अवस्था मे पत्ती के निचले हिस्से पर खाते हैं जिससे पत्तियों की ऊपरी सतह छोटे बिन्दुओं से भर जाती है। इन अष्टपदीयों द्वारा उत्पादित जाल/रेशम आमतौर पर दिखाई देता है। अधिक प्रकोप होने पर पत्तियों का रंग फीका

पड़ने लगता है तथा कभी-कभी पत्तियां गिरने लगती हैं।

माईट

प्याज व लहसुन में समेकित कीट प्रबंधन

- खेत को साफ और खरपतवार मुक्त रखें। प्याज और लहसुन की कीट ग्रसित पौध को खेत में न लगाए ।
- लगातार एक ही वर्ग की फसल खेत में न लगाए। उन्हें फसल चक्र पद्धति में अपनाएँ।
- थ्रिप्स रंग के प्रति बहुत संवेदनशील होती है, तो रंगीन खासकर नीला-धूसर ट्रैप्स या मल्च (पलवार) इसके नियंत्रण के लिए प्रयोग किया जा सकता है।
- थ्रिप्स की निगरानी के लिए 4-5 ट्रैप्स प्रति एकड के हिसाब से पौधों की ऊंचाई से लगभग 15 सेंटीमीटर ऊपर लटकाएँ।
- प्याज और लहसुन को ऐसी मिट्टी में न उगाएँ जिसमें अविघटित कार्बनिक पदार्थ यानि बिना सड़े हुये जैविक अवशेष ज्यादा मात्रा में हो।
- पौधे से पौधे की उचित दूरी बनाकर प्याज एवं लहसुन की बुवाई करें ।
- बाढ़, सिचाई या अधिक बारिश जमीन में माईट की जनसंख्या के स्तर को कम करने में मदद करती है।
- आवश्यकता अनुसार ही कीटनाशीयों का छिड़काव करें।
- थ्रिप्स कीट का प्रकोप होने पर , मैलाथियान 2 मि. ली. (साईथियान/मैलाथियान 50 ई. सी) या कार्वेरिल 2 ग्रा (सेविन 50 डब्ल्यू पी) को प्रति लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें।

- माईट की रोकथाम के लिए डाइकोफाल 18.5 ई. सी. 2 मि.ली. प्रति लीटर पानी का प्रयोग करें।
- प्याज की मक्खी प्रबंधन के लिए कार्बोफयूरान 3 जी (फयूराडान) 1 किलो स. प. प्रति हैक्टेयर मृदा में रोपाई के समय डाले।
- इनके नियंत्रण हेतु घोल में 0.1 % ट्राइट्रोन या सैनडोविट या टीपोल नमक चिपचिपा पदार्थ अवश्य मिलाएं।